न्याय दर्शन में शब्दार्थ सम्बन्ध

रूचि कुमारी

भारतीय न्यायदर्शन का इतिहास अत्यन्त ही प्राचीन है। जब से हमारी सभ्यता और संस्कृति का जन्म हुआ है तभी से इसका भी जन्म बतलाया जाता है। भारतीय दृष्टिकोण से इसको एक बहुत ही बड़े अर्थ में ग्रहण किया जाता है। इससे भिन्न–भिन्न प्राचीन नाम हैं जैसे–आन्वीक्षिकी।

नैयायिक शब्द और अर्थ को भिन्न–भिन्न मानते हैं। उनके अनुसार शब्द तथा अर्थ में वाच्यवाचक भाव संबंध है। वे मीमासंकों के शब्द तथा अर्थ में स्वाभाविक संबंध मानने का खण्डन करते हैं। नैयायिकों के अनुसार मीमांसक शब्द तथा अर्थ में स्वाभाविक संबंध मानकर भी नहीं मानते।